सेवामें,

माननीय अध्यक्ष महोदय,

जी–20, केम्प उदयपुर, राजस्थान,

भारत।

आदरणीय श्रीमान्,

इस अपील का केन्द्रीय विचार इस बात पर जोर देता है कि मानव समुदाय अपने इतिहास में मौसम परिवर्तन के ''जीवन या मौत'' की सबसे बड़ी चुनौती का सामना कर रहा है। हमारे विचार में इस संकट का बुनियादी कारण चल रही अन्यायकारी और अतर्कसंगत कॉरपोरेट सामाजिक व्यवस्था में विद्यमान है, जबकि तात्कालिक कारण इसके पर्यावरण विरोधी और मानव विरोधी कॉरपोरेट नीतियों में समाहित है। साथ ही इसका समाजशास्त्रीय कारण एडम स्मिथ के अतार्किक आर्थिक सिद्धान्त कि ''मानव स्वभाव से स्वार्थी है'' में निहित हैं।

यह प्रस्थापना मनुष्य के जैव-सामाजिक चरित्र की वास्तविकता के उलट है। इस संकट का वास्तविक उत्तर हमारे अनुसार प्रकृति-मानव केन्द्रित एजेण्डा से ही निकल सकता है।

आप श्रीमान से निवेदन है कि संलग्न अपील की एक प्रति जी –20 के प्रत्येक सदस्य को उपलब्ध करावें ।

अत्यधिक सम्मान और शुभकामनाओं के साथ एवं प्रत्याशा में आपको धन्यवाद।

कृपया पावती भेजे।

दिनांक – 04.12.2022

सत्यनिष्ठा में,

आपका,

दीदार सिंह, *अध्यक्ष,*

प्रकृति-मानव केन्द्रीत जन आन्दोलन, भारत

मोबाईल नं. 7051140251

एक अपील

सन् 1972 में पर्यावरण एवं विकास पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित स्टॉकहोम कान्फ्रेस के बाद विभिन्न वैज्ञानिक रिपोर्टों में लगातार गंभीर खतरे के संकेत (रेड सिंगनल) दर्शाए जाते रहे हैं। साररूप में मानव समुदाय को 21वीं सदी में सभी सामाजिक क्षेत्रों में अमानवीयकरण तथा पर्यावरण के सभी घटकों में जलवायु संकट की चुनौती का सामना है।

जी–20 की वर्तमान स्थितिः जी–20 विश्व की बीस सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं का एक मंच है, जो विश्व अर्थव्यवस्था के समक्ष सर्वोच्च दबाव वाले मामलों पर विचार विमर्श करने के लिए नियमित बैठके करता हैं, कभी-कभी धन एवं बाजार के नजरिए वाले अन्य विषयों पर भी बैठके करता है, इसके विषयों में – ऊर्जा–आपूर्ति, भोजन सुरक्षा, मौसम परिवर्तन, स्वास्थ्य, डिजिटलाईजेशन, भू-राजनैतिक दरारें, मुद्रा-स्फीति या महंगाई आदि होते हैं।

जी–20 के खाते में विश्व जीडीपी का 80 प्रतिशत से अधिक; विश्व व्यापार का 75 प्रतिशत तथा विश्व जनसंख्या का 60 प्रतिशत भाग आता हैं।

विकासशील देशों के लिए ग्लोबल फंदाः कोरोना महामारी की शुरूआत से गरीब देशों ने उनके जी–20 ऋणदाताओं को 113 अरब अमेरीकी डालर दे चुके थे, ऐसे वक्त में जब गरीब देशों में अमीर देशों से चार गुणा से ज्यादा लोग कोविड से मरे थें।

जी–20 देश प्रतिदिन 136 मिलियन (13.6 करोड़) अमेरिकी डालर विश्व के गरीबतम् देशों से कर्ज का भुगतान पाते हैं, ऐसे समय में जब इन गरीब देशों में 828 मिलियन (82.8 करोड़) लोग भूखमरी के शिकार हैं।

सन् 2021 में गरीब देश अपने बजट का 27.5 प्रतिशत राशि ऋण भुगतान के बदले में चुकाने को मजबूर थे। यह राशि स्वास्थ्य राशि की चार गुणा से ज्यादा थी, तथा सामाजिक सुरक्षा की राशि से 12 गुणा ज्यादा थी। यहां तक कि पब्लिक क्लाईमेट फाईनेन्स (मौसम परिवर्तन से संबंधित सार्वजनिक धन राशि) जो जी–20 के कई देशों सहित विश्व के धनवान देशों से प्राप्त करते रहें, उसका 71 प्रतिशत ऋण था।

जी–20 अब 89 प्रतिशत अरबपतियों का घर है, जिनकी दौलत 10 ट्रिलियन (10000 अरब) अमेरिकी डालर है। ऊर्जा और भोजन व्यवसाय के अरबपति अभी प्रतिदिन आधा अरब (50 करोड़) डालर प्राप्त करके अमीर बन रहे हैं। दुनिया के भोजन व्यवसायियों ने रिकार्ड लाभ कमाया है। भोजन और कृषि व्यापारी अरबपतियों की कुल सम्पति पिछले दो वर्षों में 382 अरब (38200 करोड़) अमेरिकी डालर तक बढी है तथा उन्होनें रूस–यूक्रेन युद्ध के दौरान भारी लाभ कमाया है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन् 2022 में मानवीय आधार पर खाद्य सुरक्षा के लिए 17.1 अरब अमेरिकी डालर देने की अपील की है लेकिन देने वालों ने केवल 7 अरब अमेरिकी डालर दिए हैं – ''कारपोरेट मानवतावाद की निर्दयता'' इस प्रकार की है। ग्लोबल जनसंख्या की गरीबतम् आधी आबादी की (खरीदने की शक्ति के मामलें में) शक्ति 2900 यूरों डालर प्रति वयस्क हैं जबकि उपर के 10 प्रतिशत लोगों की खरीद शक्ति इससे लगभग 190 गुणा से ज्यादा हैं।

आक्सफेम की सर्वे रिपोर्ट के मुताबिक 161 देशों में से 143 देशों ने अमीर नागरिकों का टेक्स रेट स्थिर कर दिया है। (यानि अमीरों का लाभ बढनें पर भी टेक्स नहीं बढाना) तथा 11 देशों ने टेक्स कम कर दिया है। कॉरपोरेट टेक्स धोखाधड़ी बड़े पैमाने पर जारी है, एक अनुमान के मुताबिक सन् 2019 में एक ट्रिलियन (1000 अरब) डालर कॉरपोरेट लाभ राशि को टेक्स हेवन क्षेत्र (ऐसे बैंक जहां हिसाब–किताब पूछा नहीं जाता) में स्थानान्तरित कर दिया गया है।

सार रूप में – एक व्यवस्था जो लगातार अरबपति पैदा कर रही है,
वह अमानवीयकरण नहीं रोक सकती
कारपोरेट सेक्टर जो इस घातक चुनौती जलवायु संकट का जन्मदाता है,
वह इसका समाधान नहीं कर सकता।

ग्लोबल कार्बनडाईआक्सासईड उत्सर्जन सन् 2021 में 38 अरब टन के स्तर पर पहुॅच गया। जी–20 देश इस उत्सर्जन में 81 प्रतिशत का योगदान करते हैं। इस उत्सर्जन में सबसे ज्यादा कार्बन उत्सर्जन जी–20 के सदस्य देश चीन, अमेरिका और यूरोपीयन युनियन थे।

उत्सर्जन में कमी करने के वादे के बावजूद जी–20 देश जीवाश्म ईंधन काम में लेने वाली कम्पनियों को सन् 2015 से सन् 2021 के बीच 3.3 ट्रिलियन (3300 अरब) डालर की सहायता दी। बहुत से देशों ने यह सबसिडी बढाई है– आस्ट्रेलिया 48.2 प्रतिशत, अमेरिका 36.7 प्रतिशत, इण्डोनेशिया 26.9 प्रतिशत, फ्रांस 23.8 प्रतिशत, चीन 4.1 प्रतिशत, ब्राजील 3.0 प्रतिशत, मेक्सिको 2.6 प्रतिशत, भारत ने सन् 2021–22 में क्लीन ऊर्जा के मुकाबले 9 गुणा ज्यादा सबसिडी दी। ***(Ref: theprint.in)***

पीछे की तरफ देखेः 1972 की स्टॉकहोम सम्मेलन से सन् 1992 की रियो कांफ्रेस, 1997 का क्योटो प्रोटोकॉल, 2002 का टिकाऊ विकास पर जोहान्सबर्ग सम्मेलन, 2007 का बाली सम्मेलन, 2009 का

कोपनहेगन सम्मेलन तथा 2015 का पेरिस सम्मेलन, जिसमें क्योटो प्रोटोकॉल को समाप्त किया, 2021 का ग्लासगो में कॉप–26 सम्मेलन जिसमें कॉल आउट(कोयला जलाना समाप्त करना) से कॉलडाउन(कोयला जलाना धीरे–धीरे कम करना) की कूटनीति तथा कॉप–27 की टेबल पर मुख्य एजेण्डा उत्सर्जन कम करने की जगह क्षति और नुकसान की तरफ सरकाना, यहां अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन ने कार्बन उत्सर्जन रोकने की बजाय मिथेन उत्सर्जन रोकने के मुद्दे की तरफदारी की। जलवायु संकट को समर्पित इन सत्ताईस विश्व स्तरीय कसरतों के शून्य नतीजों को विश्व मानव समुदाय आसानी से समझ सकता है।

प्रकृति-मानव केन्द्रित जन आन्दोलन का आकलन है कि मानव जाति बहुत ही खतरनाक चुनौतीपूर्ण भविष्य की ओर आगे बढ रही है, जिसमें निम्नलिखित खतरों का सामना हैं।

- ग्लोबल वार्मिंग की चुनौति मानव जाति के लिए सबसे घातक– इससे मानव समाज सहित सम्पर्ण जैव जगत हमेशा के लिए समाप्त हो जायेगा।
- बढती हुई जनसंख्या जो अब पृथ्वी ग्रह पर 8 अरब हो चुकी है।
- बदलते पर्यावरण और मानवीय कारकों के कारण कृषि जुताई क्षेत्र का निरन्तर घटते जाना।
- पीने के साफ पानी की उपलब्धता में कमी इससे मानव स्वास्थ्य को संकट पैदा हो रहा है।
- घातक और असाघ्य बीमारियों का फैलाव।

प्रकृति-मानव केन्द्रित एजेण्डा में दो भूलभूत कारक एवं नीचे लिखे बुनियादी सिद्धान्त समाहित हैं

दो मूलभूत कारक : प्रकृति (या पर्यावरण) और मानव समुदाय हमारी पृथ्वी पर जैव-जीवन के अस्तित्व के दो मूलभूत कारक है, मानव समुदाय एक मूलभूत कारक है क्योंकि पृथ्वी ग्रह पर ये मानव जाति ही जैव-सामाजिक प्रजाति है। अन्य सभी जीव प्रजातियां केवल जैविक ही हैं क्योंकि उनका चरित्र स्वहित का हैं, वे कोई सामाजिक चरित्र नहीं रखते । इस प्रकार ये केवल मानव समुदाय अकेला ही है जो हमारे ग्रह पर सभी जीवों के हितों की रक्षा कर सकता है।

बुनियादी सिद्धान्त : जीडीपी की कीमत पर भी, सभी जगह और हर वक्त पर्यावरण टिकाउपन का खयाल रखना, लोगों के बीच भाईचारे का मजबूत संबंध बनाना, कारपोरेट पूंजी समर्थक भ्रष्ट राजनीतिक पार्टियों और व्यापारिक घरानों की जगह लोगों का सशक्तिकरण करना, प्रत्येक वंचित और जरूरतमंद व्यक्ति को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना, अतर्कसंगत आय भिन्नता को तार्किक समता 1:5 के अनुपात में लाना , सभी सार्वजनिक मामलों में पारदर्शिता लागू करना, कदम ब कदम संयुक्त राष्ट्रसंघ और अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों तथा राष्ट्र राज्य के शक्ति ढांचे और उनके कामकाज का लोकतांत्रिकरण करना।

प्रकृति-मानव केन्द्रित जन आन्दोलन जी–20 के सभी सदस्यों से बुनियादी सिद्धान्तों एवं दो मूलभूत कारकों के मार्गदर्शन से शुरूआत करने तथा निम्नलिखित एजेण्डा को सर्वोच्च प्राथमिकता में लेकर लागू करने की अपील करता हैः–

1. रक्षा एवं विदेशी मामलों और नीतियों में बदलाव करना।
2. प्रत्येक देश में तथा विश्व स्तर पर चल रहे स्टॉक मार्केट के संचालन को बंद करना, जो बिना किसी निवेश के अरबपतियों को पैदा करता है तथा किसी भी प्रकार का रोजगार नहीं देता।
3. कामगारों के सशक्तिकरण और साधारण शेयर धारकों पर आधारित एक नया विकास मॉडल स्वीकार करना एवं व्यवहार में लाना।
4. सभी काले धन और गुप्त व्यापारिक संचालन को समाप्त करना।
5. एक नई सहकारिता आधारित कृषि व्यवस्था को अपनाना।
6. गांव, जिला, क्षैत्र, राष्ट्र राज्य से लेकर विश्व स्तर पर बाजार में अनुचित या अनैतिक व्यापार को खत्म करना।

7. सभी असंगठित गतिविधियों का सहकारिकरण करके असंगठित व्यवसाय एवं कार्यो का एक नया मॉडल तैयार करना और उसे लागू करना।
8. सम्पूर्ण विश्व बचत को क्लीन ऊर्जा पैदा करने में लगाना।
9. हमारी ऊर्जा को समुद्र के पानी को पीने योग्य बनाने में काम लेकर, सिंचाई के साधनों को विकसित करने, नये ग्लेशियर बनाने, विभिन्न पर्यावरणीय क्षैत्रों की रक्षा करके, आधुनिक प्राकृतिक कृषि को प्रोत्साहित करके तथा भूकम्प नियन्त्रण के विज्ञान को जानने की तकनीक विकसित करके अपने ग्रह की पुनःसरचना करना।
10. 25 वर्षो के भीतर सभी को सामाजिक सुरक्षा देकर जनसंख्या नियन्त्रण के लिए एक नई जनसंख्या नीति को अपनाना।
11. अन्य सौरमण्डल और उनके ग्रहों, ब्लेक हॉल घटनाक्रम, हमारी गैलेक्सी तथा अन्य गैलेक्सीयों को जानने के विज्ञान की खोज करना।

जी-20 का मंत्र - एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य

8 अरब लोगों का मंत्र - एक ग्रह, एक पर्यावरण, एक मानव समुदाय,

सभी जीवों के लिए एक सांझा घर और भविष्य में सभी के लिए ''जीवन या मौत'' की एक सांझी चुनौती

: जारीकर्ता :

दीदार सिंह
अध्यक्ष
(7051140251)

मनीराम पूनियां
सचिव
(9829358387)

प्रकृति-मानव केन्द्रित जन आन्दोलन, भारत

दिनांक : 04.12.2022

सम्पर्क एवं ईमेल

आर. सी. मखनोत्रा **9419116969 rcmakhnotra@gmail.com**

मन्नाराम डांगी 9414927387

घनश्याम डेमोक्रेट **9414864548 ghanshyamchouhan2719@gmail.com**

आर. के. मेघवाल **9414081521 rkmcrown@gmail.com**

सज्जन कुमार **9001826467 sajjankumarnhcpm@gmail.com**

सुखदेव सिंह भूपाल **9915342232 jashanpreetsingh.chahal@gmail.com**